

# Living the Lotus

4  
2021

VOL. 187

## Buddhism in Everyday Life

### Founder's Reflections

### विविधता का सामना करना

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निच्चिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एवं कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

Living the Lotus  
Vol. 187 (April 2021)

Senior Editor: Keiichi Akagawa  
Editor: Kensuke Osada  
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly  
by Rishso Kosei-kai International,  
Fumon Media Center, 2-7-1 Wada,  
Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.  
TEL: +81-3-5341-1124  
FAX: +81-3-5341-1224  
Email: living.the.lotus.rk-international  
@kosei-kai.or.jp

कार्यालय में, समान विचारधारा वाले सहयोगियों के साथ परिचित काम में लगे रहना अधिक आसान और सहल होता है। लेकिन यहाँ एक गड्ढा है। जैसा कि थांग राजवंश के चीनी भिक्षु और जेन मास्टर नानकानपुयुआन (748-835) ने कहा है, “आपको विविध जीवित प्राणियों के साथ अभ्यास करना चाहिए।”

“विविध जीवित प्राणियों के साथ,” से नानकान का अर्थ बौद्ध सूत्र में आनेवाले विभिन्न रूपों के अमानवीय जीवित प्राणियों से था। हालाँकि, जब हम हमेशा अपने जैसे लोगों की संगति में होते हैं, तो हम अपनी आदतों के आदी हो जाते हैं, अपनी प्राथमिकताओं में बँध जाते हैं, और अपने को उन आदतों से मुक्त करने में असमर्थ हो जाते हैं। इस तरह, हम नानकान के शब्दों को समझ सकते हैं, जिसका मतलब है कि इससे मुक्ति पाने के लिए, हमें अज्ञात में जाने और नए मुठभेड़ों का सामना करने की हिम्मत होनी चाहिए।

जानेमाने कार्यों में लगे रहने से आदत पड़ जाती है, जो हमें अपनी बुरी आदतों को खुले तौर पर प्रदर्शित करने को बाध्य करते हैं। यह हमारी व्यक्तिगत वृद्धि को बाधित करता है, जिससे हम क्षुद्र और अनम्य हो जाते हैं। हमारे अव्यक्त क्षमता के प्रस्फुटित होने के लिए नए मुकाबले का सामना आवश्यक है।

अप्रैल में, नए स्कूल की अवधि और वित्तीय वर्ष का आरंभ (और इसके साथ, कार्मिकों का स्थानान्तरण और नियुक्तियाँ) नए लोगों से मिलने का समय होता है। यद्यपि “विविध जीवित प्राणियों” का सामना करना तनाव बढ़ा सकता है और यहाँ तक कि कई बार दर्दनाक भी हो सकता है, हर नई मुठभेड़ के साथ एक नई खुशी की प्रतीक्षा होती है। जब आप इस पर पूर्ण विश्वास करते हैं, तो खुशी आपकी ओर आयेगी।

निक्क्यो निवानो, काइसो जुइकान 10 (कोसेइ प्रकाशन, 1997), पीपी. 44-45

“लिविंग द लोटस: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ” का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।



## President's Message

# साथ रहना, यहाँ और अभी

निचिको निवानो  
प्रेसिडेण्ट, रिश्शो कोसेइ काइ

## क्योंकि हम सद्धर्म का अभ्यास करते हैं, हम बुद्ध हैं

शीघ्र ही, 8 अप्रैल को हम शाक्यमुनि के जन्म का उत्सव मनाएँगे। एक बौद्ध कथा के अनुसार, अपने जन्म के समय, शाक्यमुनि ने घोषणा की कि "मैं ही केवल स्वर्ग में और पृथ्वी पर सम्मानित हूँ।" यह किम्बदंती शाक्यमुनि की प्रशंसा करती है, और मैं इसे बौद्ध धर्म के सार की अभिव्यक्ति के रूप में स्वीकार करता हूँ। कुछ लोगों ने शाक्यमुनि की उद्धोषणा को जन्म के रूप में वर्णित किया है कि उन्होंने इस लोक के प्राणियों में एक है। लेकिन केवल शाक्यमुनि का ही नहीं, हर व्यक्ति पैदा होने के क्षण से ही एक अपूरणीय, अनमोल अस्तित्व है। इसलिए, शाक्यमुनि की उद्धोषणा मूल बौद्ध शिक्षा को बताती है: हमें स्वयं के जीवन की अनमोलता के बारे में पता होना चाहिए।

बौद्ध धर्म की शिक्षा है कि कैसे दुसरो को दुःख दर्द से मुक्त करा सकते हैं। इस दृष्टिकोण से भी, इस उद्धोषणा में गूढ़ गंभीर अर्थ छिपा है। शाक्यमुनि को सच्चे धर्म का बोध हुआ और उसकी धर्मदेताओं के माध्यम से दुःखों से मुक्त हुए हैं। बदले में, हम अपने आसपास के लोगों को मुक्त करा सकते हैं।

बौद्ध धर्म के लंबे इतिहास के प्रकाश में, मैं यह सोचना छोड़ नहीं सकता हूँ कि शाक्यमुनि के काल से कितने लोगों ने स्वयं को मुक्त किया है। मानव प्राणी वास्तव में अद्भुत है।

हालाँकि, जैसाकि शाक्यमुनि ने भी हमसे कहा था, "हम संतों के रूप में पैदा नहीं हुए हैं - हम अपने कर्मों से संत बन जाते हैं।" हमारी मानवीय गरिमा हमारे दैनिक कार्यों से परिष्कृत होती है। जेन मास्टर डोगेन (1200-53) ने शुशो इत्तो ("अभ्यास जागृति है") वाक्यांश का उपयोग किया है। वे कहते हैं कि प्रशिक्षण जागरण का एक तरीका नहीं है - इसके बजाय, श्रमसाध्य अभ्यास सिद्ध करता है कि हमने जागृति प्राप्त कर ली है। दूसरे शब्दों में, हम बुद्ध के उपदेशों का अध्यवसायी होकर दैनिक जीवन में अभ्यास करते हैं, यह इस बात का प्रमाण है कि हम बुद्ध हैं। इस अभ्यास के माध्यम से अपनी करुणा को गहरा करना बुद्ध मार्ग है।

### वसंत की हवा जैसा

पुण्डरीक सूत्र का परिवर्त- 23: "बोधिसत्व भैषज्यराज पूर्वयोग" में बुद्ध की धर्मदेशनाओं का अभ्यास करने के लिए अपने स्वयं के शरीर का उपयोग करने के महत्व को दर्शाया गया है और जिससे कई लोगों के मन में सर्वोच्च जागृति की आकांक्षा उत्पन्न हुई।

स्पष्ट बोलें तो, दूसरों को पहले रखकर, आप अपने स्वार्थपरक विचारों से आगे निकल जाते हैं। फिर, जब आप अपने पूरे मन से अपने शब्दों का उपयोग दूसरों के हित को ध्यान में रखकर करते हैं, तो आपका धर्मदेशना का अभ्यास आपके आनंद और प्रसन्नता का कारण बन जाता है और आप सभी जीवित प्राणियों की मुक्ति के लिए एक उज्वल प्रकाश बन जाते हैं।

विशेष रूप से, कुछ लोगों ने माना है कि लोगों की सेवा करना बुद्ध मार्ग में उनका प्रशिक्षण है। आठवीं सदी के भारतीय भिक्षु शांतिदेव ने कहा कि अध्यवसाय का अर्थ है प्रकट करना, क्रिया के माध्यम से, करुणामय मन से- और ऐसा करना बौद्ध धर्म के अलावा और कहीं नहीं है। बौद्ध विद्वान हाजिमे नाकामुरा (1912-99) ने कहा कि "केवल धार्मिक शिक्षाओं को जानने का कुछ मतलब नहीं है। उन्हें हमारे शारीरिक कार्यों में कहीं न कहीं सन्निहित होना चाहिए।"

बेशक, देशनाओं का ज्ञान होना निरर्थक नहीं है, लेकिन आवश्यकता के समय किसी के पास पहुँचने की ठोस कार्य निश्चित रूप से दुःख पीड़ा से मुक्त कराने का सबसे उत्तम तरीका है।

इसके अलावा, इस तरह की गर्मजोशीली विचारशीलता प्राप्त करने की खुशी उत्प्रेरक हो सकती है, जो किसी को अपने स्वयं के जीवन और दूसरों के जीवन की अनमोलता के प्रति जागृत करती है। यहाँ तक कि एक दयालु कृत्य भी किसी के मन को सत्य की ओर मोड़ सकता है। ऐसा करुणामय उपायकौशल्य श्रद्धाविश्वास का साक्षात् करने का आरंभ हो सकता है, जो शाक्यमुनि की इच्छाओं को पूरा करता है। कोरोना वायरस महामारी के इस भयानक समय में, सबसे ऊपर, इस तरह की करुणा की विशेष रूप से आवश्यकता है।

हालाँकि, इन करुणामय उपायकौशल्य का अभ्यास करने के लिए, शांतिदेव ने भी कहा है- "जितना संभव हो सके हमारे अपने जीवन को विनम्रतापूर्वक जीना है।" इस अर्थ में, भूल नहीं करनी चाहिए कि हमें जितना कम चीजों से संतुष्ट रहकर सादगी का जीवन जीना संभव है, हम जीयें और उन चीजों के प्रति आभार प्रकट करना चाहिए।

नोबुत्सुना सासाकी (1872-1963) की कविता की कुछ पंक्तियों को उद्धृत करता हूँ -

क्या मेरा शरीर, बन सकता है,  
एक वसंती हवा, मंद मंद चलना,  
दुःख के द्वार पर।

सभी लोगों की दुःख पीड़ा के बारे में सोचकर, जो यहाँ और अब रह रहे हैं, मैं उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा हूँ, जब, वसंती हवा की तरह, हम उनमें तरोताजा करनेवाली करुणा का संचार कर सकेंगे।

From Kosei, April 2021.

# समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्रः प्रत्येक अध्याय का सारांश एवं मुख्य बिन्दुयें

निक्कयो निवानो

## सद्धर्मपुण्डरीकसूत्र

### अध्याय 25: बोधिसत्त्व अवलोकितेश्वर का सार्वभौम प्रवेश द्वार

इस परिवर्त में बोधिसत्त्व अश्वमति ने शाक्यमुनि से प्रश्न किया कि क्यों बोधिसत्त्व अवलोकितेश्वर को अवलोकितेश्वर कहा जाता है।

#### सद्धर्म से मुक्त होना और दूसरों को करुणा से मुक्त कराना

इस परिवर्त को पढ़कर बोधिसत्त्व अवलोकितेश्वर के सम्बन्ध सोचना सहज है, जिनकी शक्ति, एक व्यक्ति के रूप में बोधिसत्त्वों से अलग और भिन्न है, कुछ ऐसा है जिस पर मुक्ति के लिए निर्भर करना संभव है। यह देखना सबसे महत्वपूर्ण है, हालाँकि, यह देखना ऐसा नहीं है, लेकिन वास्तव में बोधिसत्त्व परमार्थ ज्ञान के प्रतीक है।

सही कहें तो इस परमार्थ ज्ञान का अर्थ है कि मध्यम मार्ग के सत्य को समझना, या सभी चीजों को समझना जैसा कि वे वास्तव में हैं। इसका अर्थ नहीं तो केवल शून्यता के सत्य का पालन करना - बल्कि सभी चीजों की मौलिक समानता को देखना है - और नहीं चीजों की विविधता से चिपके रहना, बल्कि इसके बजाय, दोनों के सामंजस्य की पहचान करना है।

मानव स्थिति पर लागू करते हैं, तो इसका अर्थ है कि निःशुल्क और अबाधित ज्ञान जो किसी व्यक्ति को किसी भी स्थिति के बिल्कुल अनुरूप बनाता है, जबकि उसी समय वह अपने आवश्यक गुणों और अपनी अन्य से विविधता को संरक्षित रखता है। बोधिसत्त्व अवलोकितेश्वर का यह सच्चा ज्ञान है। उनके पास अपूर्व मात्रा में करुणा है, जो उन्हें दूसरों के कष्टों को स्वयं सहन करने स्वीकार करने के लिए तत्पर रखता है।

मुक्त होने का केवल एक ही सम्यक मार्ग है: सद्धर्म को जानना, सद्धर्म का सोचना और सद्धर्म के अनुसार कार्य करना। इसके अतिरिक्त, दूसरों को मुक्त कराने के लिए, हमें करुणा की भावना से युक्त आत्मत्याग की भावना ही हमें सद्धर्म के मार्ग पर चलने के लिए अग्रसर करता है। इस परिवर्त में वास्तव में यही शिक्षा है कि बोधिसत्त्व अवलोकितेश्वर ने सात दुर्भाग्यों से लोगों को उस समय मुक्त कराते हैं, जब वे उनका स्मरण करते हैं।

प्राचीन काल में लोगों को इस तरह के भावात्मक विचारों को समझने में कठिनाई होती थी, यही कारण है कि बोधिसत्त्व अवलोकितेश्वर को पुण्डरीक सूत्र में सुंदर सौम्य रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो अवबोधन की अद्वितीय शक्तियों से सम्पन्न हैं और वे संसार के समस्त ध्वनियों को सुन लेते हैं: वे हर चाल को पहचानते हैं और जानते हैं कि हर कोई क्या चाहता है। फिर, महाकरुणा का प्रदर्शन करते हुए, वे वर्णित तैत्सीस रूप में प्रकट होकर प्राणियों का हर दुःख दर्द से उद्धार करते हैं। इस परिवर्त की शिक्षा है कि ऐसे प्राणी का स्मरण कर आह्वान करना मुक्ति लाता है, क्योंकि मन सद्धर्म के साथ गूँजता है।



## बोधिसत्त्व अवलोकितेश्वर की तरह बनने की लालसा

हमें बोधिसत्त्व अवलोकितेश्वर के अद्वितीय रूप के बारे में सोचना चाहिए और उनके जैसा बनने की कामना करनी चाहिए। बोधिसत्त्व का पूर्ण मनोभाव से अनुकरण करने में, जो भी कठिनायाँ हमारे सामने आती हैं, वे हमें मदद करने के लिए प्रेरित करते हैं, जब भी हम दूसरों को परेशानी में देखते हैं।

## सार्वभौम प्रवेश द्वार का आविर्भाव

“सार्वभौम प्रवेश द्वार का आविर्भाव” का अर्थ है कि बोधिसत्त्व अवलोकितेश्वर इस समस्त संसार में, हर समस्या और स्थिति में (और प्रत्येक के लिए उपयुक्त रूप में) प्रकट होते हैं, ताकि लोगों को मुक्ति और सत्य की ओर प्रवृत्त किया जा सके।

बोधिसत्त्व अवलोकितेश्वर के समान बनने की कामना, कुछ और नहीं, बल्कि सार्वभौम प्रवेश द्वार की अभिव्यक्ति का सार है। लिए इसका मतलब उन लोगों की सहायता करना है जो पीड़ा और संकट में हैं - हमारा परिवार, समुदाय, देश और यहाँ तक कि समस्त संसार- और उनके अनुकूल अपनी स्थिति के उपयुक्त विधि का उपयोग करना चाहते हैं। ये क्रियाएं महाकरुणामय मन से आती हैं, जो दूसरों के लिए कोई भी आत्म-बलिदान के लिए तत्पर रहता है, यह वही मन है, जो अवलोकितेश्वर का है।

जहाँ तक संभव है, यदि बहुत से लोग इन कार्यों को करते हैं, हालाँकि छोटा ही हो, यह नहीं केवल परिवार और समाज में, बल्कि संसार में शांति लाएगा। इस अर्थ में, सार्वभौम प्रवेश द्वार की अभिव्यक्ति इस परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण बिंदु है।

## गुण और शक्ति सद्धर्म और उसके अभ्यास से उत्पन्न होती है

एक और बिंदु जिसकी अनदेखी नहीं कर सकते हैं, वह है जिस तरह से बोधिसत्त्व क्षयमति बोधिसत्त्व अवलोकितेश्वर के महान गुणों और शक्ति से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने उन्हें अपना हार अर्पण किया। अवलोकितेश्वर ने इसे स्वीकार किया और इसे दो भागों में विभाजित कर एक भाग को शाक्यमुनि लोकप्रतिष्ठ को अर्पित किया और दूसरा भाग बुद्ध प्रभूतरत्न के स्तूप पर चढ़ा दिया।

यह इस तथ्य का प्रतीक है कि बोधिसत्त्व अवलोकितेश्वर के गुण एवं शक्तियाँ सद्धर्म के समान हैं - स्तूप जिस सत्य का प्रतिनिधित्व करता है - और शाक्यमुनि जिन्होंने इसे प्रकाश में लाया और इसका अभ्यास करते हैं। हम यहाँ स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि यह सोचना बहुत गलत है कि हम केवल बोधिसत्त्व अवलोकितेश्वर के स्मरण और आह्वान करके मुक्त हो जाएँगे।





## सद्धर्मपुण्डरीकसूत्र

### अध्याय 26: धारणी परिवर्त

इस परिवर्त में, शक्तिशाली जीवित प्राणी जो पुण्डरीक सूत्र की गहराई से प्रशंसा करते हैं, वे बुद्ध के समक्ष जाने के लिए प्रेरित होंगे और धर्मदेशानाओं और धर्मभानकों, दोनों की रक्षा करने की प्रतिज्ञा लेंगे। वे धारणी के योग से करते हैं: हर धारणी मंत्र में क्षमता है कि बुराई के प्रति झुकाव को मिटा देता है और अच्छाई को आगे बढ़ाता है। इस परिवर्त के धारणियों की संरचना में प्रायः देवताओं के नाम और उनकी उपाधियाँ हैं - इसका कारण है कि उनका उपयोग देवताओं की कृपा पाने के लिए आह्वान करने में किया जाता है।



### पाँच प्रकार के अनानुवादित शब्द और वाक्यांश

इस परिवर्त में कई धारणी मंत्र सम्मिलित हैं जिनका, प्रमुख अनुवादक कुमारजीव ने अनानुवादित छोड़कर लिप्यांतर दिया है। जिन विद्वान भिक्षुओं ने कुमारजीव के साथ इस बौद्ध सूत्र का चीनी भाषा के अनुवाद में सहयोग किया था, उनकी सहमति से ये ऐसे शब्द और वाक्यांश हैं, जिनका अनुवाद संभव नहीं था, उनकी जगह उनको समान उच्चारण के चीनी कैरेक्टर का उपयोग करके उन्हें मूल भाषा में प्रस्तुत किया गया है। कई अनुवादकों द्वारा धारणी के बारे में विचार था कि उन्हें “अनानुवादित शब्दों और वाक्यांशों के पाँच प्रकार” कहा जा सकता है:

1. ऐसे शब्द जिन के लिए चीनी समकक्ष मौजूद नहीं थे, जैसे कि भारतीय जानवरों, पौधों या पौराणिक जीवों और आत्माओं के नाम;
2. जिनके कई अर्थ निकलते हैं, उन सभी अर्थों को एक चीनी कैरेक्टर में समाहित कर अनुवादित नहीं किया जा सकता था;
3. “रहस्यमय शब्दांश,” अन्यथा “गुह्य शब्दांश” के रूप में जाना जाता है, जिसका अनुवाद करने से गुह्य अर्थ का महत्व कम हो जाएगा;
4. वे जो परम्परा से मिसाल के रूप में अनानुवादित हैं;
5. जिनका अनुवाद होने पर उनके अर्थ के सत्य या प्रभाव के खोने जाने का भय था।

यह उस पाठ का हिंदी अनुवाद है जिसका जापानी मूल होक्के सानबुक्यो: काकु होन नो आरामासी तो योतेन (समेकित त्रिविध पुण्डरीकसूत्र: प्रत्येक परिवर्त का सारांश और मुख्य बिंदुएँ) में संस्थापक निक्क्यो निवानो के नाम प्रकाशित है, (कोसेइ प्रकाशन, 1991 [संशोधित संस्करण, 2016]), पीपी. 208-15.



## Director's Column

### अपने जीवन के अधिकांश भाग को बुद्ध मार्ग बनाना

रेवरेन्ट केइइची आकागावा  
निदेशक, रिश्शो कोसेइ काइ इंटरनेशनल

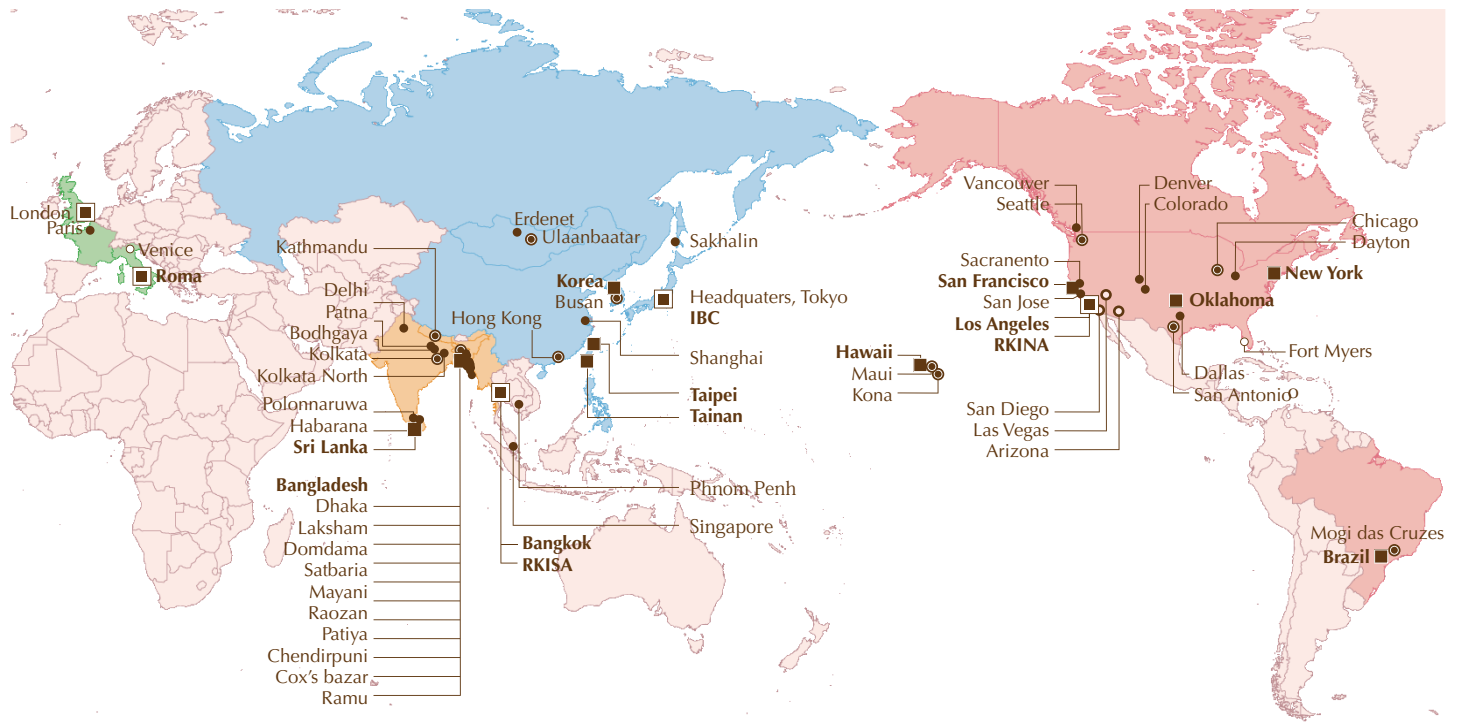
इस महीने, जैसा कि हम शाक्यमुनि के जन्म दिन का उत्सव मनाते हैं, प्रेसिडेण्ट निचिको निवानो, शाक्यमुनि द्वारा अपने जन्म की उद्घोषणा का अर्थ बताते हैं और जोर देते हैं कि हम सभी का जीवन कितना बहुमूल्य है। वे हमें यह भी सिखाते हैं कि हमारे जीवन का अधिकतम लाभ बुद्ध मार्ग के अभ्यास में है। यह सुनने से पहले, हमें कल्पना नहीं थी कि बुद्ध के उपदेशों के अभ्यास के लिए हम अपने दैनिक जीवन के धार्मिक कृत्यों का निष्पादन कैसे करते हैं। यह प्रमाण है कि हम बुद्ध हैं।

मैं एक बौद्ध के रूप में सबसे अधिक प्रसन्नचित्त रहूँगा, यदि मैं दूसरों को मुक्त कराते हुए अपने को मुक्त कराने का जीवन जी सकता हूँ, जो शाक्यमुनि के समय से बौद्धों के जीवन का आदर्श है।

आपने ऐसे वाक्यांश सुना होगा, जैसेकि “अच्छे कर्मों का पूरे मनोयोग से अभ्यास करना जारी रखें” और “ऐसा प्रयास बार बार करें, जबतक कि यह आपकी प्रसन्नता का कारण नहीं बन जाता है और आपके जीवन जीने के तरीके को बदल देता है। जब आप पुनर्जन्म लेते हैं, तो फिर से प्रयास करें।” ये शब्द हम जैसे गृहस्थ प्रयास करनेवालों को संबोधित करते हैं, जो बौद्ध धर्मदेशनाओं को अपने दैनिक जीवन में पालन करते हैं। यह प्रयास, बोधिसत्व की चर्या के अभ्यास की ओर इंगित करता है, जो करुणामय उपायकौशल्य के माध्यम से अपने और दूसरों के जीवन में प्रसन्नता लाना चाहते हैं।

मुझे विश्वास है कि कोविड-19 महामारी किसी दिन समाप्त हो जाएगी, जैसे कि हर वर्ष कोमल वसंत की हवा को शीतश्रुतु की ठंडी हवा बदल देती है, वैसे ही सम्पूर्ण संसार के लोगों के मन में शांति और सुकून लौट आएगा।

# Rissho Kosei-kai: A Global Buddhist Movement



## Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii

2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, USA  
 TEL: 1-808-455-3212 FAX: 1-808-455-4633  
 Email: sangha@rkhawaii.org URL: <http://www.rkhawaii.org>

## Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center

1809 Nani Street, Wailuku, HI 96793, USA  
 TEL: 1-808-242-6175 FAX: 1-808-244-4625

## Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center

73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona, HI 96740, USA  
 TEL: 1-808-325-0015 FAX: 1-808-333-5537

## Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, USA  
 POBox 33636, CA 90033, USA  
 TEL: 1-323-269-4741 FAX: 1-323-269-4567  
 Email: rk-la@sbcglobal.net URL: <http://www.rkina.org/losangeles.html>

Please contact Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas**

## Rissho Kosei-kai of San Francisco

1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, USA  
 POBox 778, Pacifica, CA 94044, USA  
 TEL: 1-650-359-6951 Email: [info@rksf.org](mailto:info@rksf.org)

Please contact Rissho Kosei-kai of San Francisco

- Rissho Kosei-kai of Sacramento**
- Rissho Kosei-kai of San Jose**

## Rissho Kosei-kai of New York

320 East 39th Street, New York, NY 10016, USA  
 TEL: 1-212-867-5677 Email: [rkny39@gmail.com](mailto:rkny39@gmail.com) URL: <http://rk-ny.org>

## Rissho Kosei-kai of Chicago

1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056, USA  
 TEL: 1-773-842-5654  
 Email: [murakami4838@aol.com](mailto:murakami4838@aol.com) URL: <http://rkchi.org>

## Rissho Kosei-kai of Fort Myers

URL: <http://www.rkftmyersbuddhism.org>

## Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma

2745 N.W. 40th St., Oklahoma City, OK 73112, USA  
 POBox 57138, Oklahoma City, OK 73157, USA  
 TEL: 1-405-943-5030 FAX: 1-405-943-5303  
 Email: [rkokdc@gmail.com](mailto:rkokdc@gmail.com) URL: <http://www.rkok-dharmacenter.org>

## Rissho Kosei-kai Dharma Center of Denver

1255 Galapago St. #809 Denver, CO 80204, USA  
 TEL: 1-303-446-0792

## Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton

617 Kling Drive, Dayton, OH 45419, USA  
 URL: <http://www.rkina-dayton.com>

## The Buddhist Center Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)

2707 East First St., Suite #1, Los Angeles, CA 90033, USA  
 TEL: 1-323-262-4430 FAX: 1-323-269-4567  
 Email: [dharmasa@rksabuddhistcenter.org](mailto:dharmasa@rksabuddhistcenter.org)  
 URL: <http://rksabuddhistcenter.org>

## Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio

(Address) 6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, USA  
 (Mail) POBox 692148, San Antonio, TX 78249, USA  
 TEL: 1-210-558-4430 FAX: 1-210-696-7745  
 Email: [dharmasanantonio@gmail.com](mailto:dharmasanantonio@gmail.com)  
 URL: <http://www.rkina.org/sanantonio.html>

## Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center

28621 Pacific Highway South, Federal Way, WA 98003, USA  
 TEL: 1-253-945-0024 Email: [rkseattlewashington@gmail.com](mailto:rkseattlewashington@gmail.com)  
 URL: <http://buddhistlearningcenter.org>

## Rissho Kosei-kai of Vancouver

Please contact RKINA

## Rissho Kosei-kai do Brasil

Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP, CEP 04116-060, Brasil  
 TEL: 55-11-5549-4446, 55-11-5573-8377  
 Email: [risho@rkk.org.br](mailto:risho@rkk.org.br) URL: <http://www.rkk.org.br>



**Risho Kosei-kai de Mogi das Cruzes**

Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP, CEP 08730-000, Brasil

**在家佛教韓國立正佼成會**

〒 04420 大韓民國 SEOUL 特別市龍山區漢南大路 8 路 6-3  
6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea  
TEL: 82-2-796-5571 FAX: 82-2-796-1696

**在家佛教韓國立正佼成會釜山支部**

〒 48460 大韓民國釜山廣域市南區水營路 174, 3F  
3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea  
TEL: 82-51-643-5571 FAX: 82-51-643-5572

**社團法人在家佛教立正佼成會**

台灣台北市中正區衡陽路 10 號富群資訊大廈 4 樓  
4F, No. 10, Hengyang Road, Jhongheng District, Taipei City 100, Taiwan  
TEL: 886-2-2381-1632, 886-2-2381-1633 FAX: 886-2-2331-3433

**台南市在家佛教立正佼成會**

台灣台南市東區崇明 23 街 45 號  
No. 45, Chongming 23rd Street, East District, Tainan City 701, Taiwan  
TEL: 886-6-289-1478 FAX: 886-6-289-1488  
Email: koseikaitainan@gmail.com

**Rissho Kosei-kai South Asia Division**

Thai Rissho Friendship Foundation  
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand  
TEL: 66-2-716-8141 FAX: 66-2-716-8218

**Rissho Kosei-kai of Kathmandu**

Ward No. 3, Jhamsikhel, Sanepa-1, Lalitpur, Kathmandu, Nepal

**Rissho Kosei-kai of Kolkata**

E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094, India

**Rissho Kosei-kai of Kolkata North**

AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,  
West Bengal, India

**Rissho Kosei-kai of Bodhgaya Dharma Center**

Ambedkar Nagar, West Police Line Road, Rumpur, Gaya-823001,  
Bihar, India

**Rissho Kosei-kai of Patna Dharma Center**

Please contact Rissho Kosei-kai of Kolkata

**Rissho Kosei-kai of Central Delhi**

77 Basement D.D.A. Site No. 1, New Rajinder Nagar,  
New Delhi 110060, India

**Rissho Kosei-kai of Singapore**

Please contact Rissho Kosei-kai International

**Rissho Kosei-kai of Phnom Penh**

W.C. 73, Toul Sampaov Village, Sangkat Toul Sangke, Khan Reouseykeo,  
Phnom Penh, Cambodia

**RKISA Rissho Kosei-kai International of South Asia**

Thai Rissho Friendship Foundation  
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand  
TEL: 66-2-716-8141 FAX: 66-2-716-8218

**Rissho Kosei-kai of Bangkok**

Thai Rissho Friendship Foundation  
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand  
TEL: 66-2-716-8216 FAX: 66-2-716-8218 Email: info.thairissho@gmail.com

**Rissho Kosei Dhamma Foundation**

No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka  
TEL: 94-11-2982406 FAX: 94-11-2982405

**Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa**

Please contact Rissho Kosei Dhamma Foundation

**Rissho Kosei-kai Bangladesh**

85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh  
TEL: 880-2-41360470

**Rissho Kosei-kai Mayani**

Mayani Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai Damdama**

Damdama Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai Satbaria**

Village: Satbaria Bepari Para, Chandanaih, Chittagong, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai Chendhirpuni**

Village: Chendhirpuni, P.O.: Adhunogar, P.S.: Lohagara, Chittagong,  
Bangladesh

**Rissho Kosei-kai Raozan**

Dakkhin Para, Ramzan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai Laksham**

Village: Dhupchor, Laksham, Comilla, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai Dhaka**

408/8 DOSH, Road No 7 (West), Baridhara, Dhaka, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai Cox's Bazar**

Ume Burmize Market, Tekpara, Sadar, Cox's Bazar, Bangladesh

Please contact Rissho Kosei-kai Bangladesh

**Rissho Kosei-kai Patiya****Rissho Kosei-kai Ramu****Rissho Kosei-kai Aburkhiln****Buddiyskiy khram "Lotos"**

4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk 693005, Russia  
TEL: 7-4242-77-05-14

**Rissho Kosei-kai of Hong Kong**

Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road, North Point, Hong Kong, China

**Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai****Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar**

(Address) 15F Express Tower, Peace avenue, khoro-1, Chingeltei district,  
Ulaanbaatar 15160, Mongolia  
(Mail) POBox 1364, Ulaanbaatar-15160, Mongolia  
TEL: 976-70006960 Email: rkkmongolia@yahoo.co.jp

**Rissho Kosei-kai of Erdenet**

Please contact Rissho Kosei-kai International

**Rissho Kosei-kai di Roma**

Via Torino, 29, 00184 Roma, Italia  
TEL/FAX: 39-06-48913949 Email: roma@rk-euro.org

Please contact Rissho Kosei-kai di Rome

**Rissho Kosei-kai of Paris****Rissho Kosei-kai of Venezia****Rissho Kosei-kai of the UK**

29 Ashbourne Road, London W5 3ED, UK  
TEL: 44-20-8933-3247 Email: info@rkuk.org URL: <https://www.rkuk.org>  
Facebook: <https://www.facebook.com/rkuk.official>  
Twitter: [https://twitter.com/rkuk\\_official](https://twitter.com/rkuk_official)  
Instagram: [https://www.instagram.com/rkuk\\_official](https://www.instagram.com/rkuk_official)

**Rissho Kosei-kai International Buddhist Congregation (IBC)**

166-8537 東京都杉並区和田 2-7-1 普門メディアセンター 3F  
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan  
TEL: 03-5341-1230 FAX: 03-5341-1224 URL: <http://www.abc-rk.org>